ISSN : 2394-1022

संस्कृतिशोधसन्देशः

A Quarterly Trilingual Peer Reviewed National Research Journal

समकक्षव्यक्तिसमीक्षितत्रैभाषिकराष्ट्रियशोधपत्रिका

नवम्बर 2019-जुलाई 2020

वर्षम् : 9, अङ्कः 31-33 संयुक्ताङ्क, पृष्ठानि : 120

प्रकाशकः

श्रीमती-मोहरीदेवीतापड़ियाशोधसंस्थानम्

जसवन्तगढ़म्-341304 (नागौरम्, राजस्थानम्)

संस्कृतिशोधसन्देशः

A Quarterly Trilingual Peer Reviewed National Research Journal

समकक्षव्यक्तिसमीक्षितत्रैभाषिकराष्ट्रियशोधपत्रिका

वर्षम् - 9 अङ्कः-31-33 संयुक्ताङ्कः नवम्बर 2019-जुलाई 2020 पृष्ठानि - 120 ISSN : 2394-1022

*** परामर्शदातृमण्डलम् ***

श्री भगवतीप्रसादबगड़िया
डॉ. जगदीशनारायणविजयः
प्रो. डॉ. दामोदरशास्त्री
प्रो. शिवकान्तझाः
डॉ. सुभाषशर्मा
डॉ. प्रमोदकुमारशर्मा
डॉ. रामकुमारदाधीचः
डॉ. सुरेशशर्मा
श्री वी.के. नागरः
श्री नथमलसाँखला
वैद्य रमेशकुमारपारीकः
डॉ. जितेन्द्रकुमार-अग्रवालः

*** परिवीक्षामण्डलम् ***

प्रो. रामकुमारशर्मा
प्रो. ब्रजभूषणओझाः • प्रो. कुलदीप शर्मा
डॉ. पवनव्यासः • डॉ. विजयकुमारदाधीचः
डॉ. धर्मेन्द्रकुमारपाठकः • डॉ. राकेशकुमारजैनः
डॉ. रामेश्वरदयालशर्मा • डॉ. नीरजत्रिवेदी
डॉ. प्रकाशरंजनमिश्रः • डॉ. कुंतलगांगुली

*** मुद्रकः ***

आइडियल कम्प्यूटर सेन्टर, जयपुरम्
मो. 9829028926

*** संरक्षकाः ***

श्री बजरंगलालतापड़िया
श्री महावीरप्रसादतापड़िया
श्री शिवरतनतापड़िया

*** प्रधानसम्पादकः ***

प्रो. विष्णुकान्तपाण्डेयः
आचार्यः, केन्द्रीयसंस्कृतविश्वविद्यालयः,
जयपुरपरिसरः, जयपुरम्

*** सम्पादकः ***

डॉ. हेमन्तकृष्णमिश्रः
सेठ श्री सूरजमलतापड़ियाआचार्यसंस्कृतमहाविद्यालयः,
पो. जसवन्तगढ़-341304 (नागौरम्, राजस्थानम्)

*** सहसम्पादकौ ***

डॉ. परमेशकुमारशर्मा
सहायकाचार्यः
श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रीयसंस्कृतविश्वविद्यालयः,
नवदेहली

डॉ. पंकजपुरोहितः
सहायकाचार्यः (अ.)
केन्द्रीयसंस्कृतविश्वविद्यालयः, जयपुरपरिसरः, जयपुरम्

प्रकाशकः

श्रीमती मोहरीदेवीतापड़ियाशोधसंस्थानम्
जसवन्तगढ़-341304 (नागौरम्, राजस्थानम्)
फोन : 01581-230882, मो. 9461926348, 9252259688
e-mail : smdt.jwg2008@gmail.com • visit us : www.stsm.edu.in

इस पत्रिका में प्रकाशित सभी लेख लेखकों के अपने निजी विचार हैं जिसका उत्तरदायित्व स्वयं लेखकों का होगा।

* अनुक्रमणिका *

1.	सामान्य तथा आरक्षित वर्ग के छात्राध्यापकों के कक्षा व्यवहार तथा शिक्षण अभिवृत्ति का अध्ययन	प्रो. रचना वर्मा मोहन	4
2.	निरुक्तं श्रोत्रमुच्यते (वेदाङ्गभूतस्य यास्कीयनिरुक्तशास्त्रस्य परिचयः)	प्रो. मोहनलालशर्मा	14
3.	अष्टाध्यायीसूत्रेषु उल्लिखिता आचार्याः	डॉ. हेमन्तकृष्णमिश्रः	16
4.	मौलाना-अबुलकलाम्महोदयानां शैक्षिकदृष्टिः योगदानञ्च	डॉ. रा.चन्द्रशेखरः	20
5.	व्याकरणाध्ययनविमर्शः	डॉ. रविशंकरपाण्डेयः	24
6.	प्रयोगधर्मी एवं क्रान्तिकारी कवि- हर्षदेव माधव	डॉ. राधावल्लभ शर्मा	31
8.	शिशुपालवधम् महाकाव्य में राजनीति	डॉ. निशा	41
9.	वर्त्तमानसन्दर्भे काव्यशास्त्रस्योपयोगिता	डॉ. प्रमोदकुमारमिश्रः	45
11.	आगमविधिना सन्धीनाम् अध्यापनम्	डॉ. सोमदत्तः	48
12.	पुराणस्य महत्वं वैशिष्ट्यञ्च	प्रकाशरंजनमिश्रः	51
13.	मीमांसादर्शने धर्माधर्मस्वरूपविचारः	राहुलकुमारझाः	55
14.	ऋग्वेदे वैश्वानराग्नेः वर्णनम्	रविशंकरमहापात्रः	62
15.	साम्नामुच्चारणं तथा सामस्वरसञ्चालनपरम्पराविचारः	शिवानन्ददूबे	64
16.	ज्योतिषशास्त्रं व्यावसायिकदक्षता च	विनोदकुमारशर्मा	67
17.	ज्योतिर्विद् संस्कृतशिक्षकः कुण्डलीनिर्माणदक्षता च	रामेश्वरः	69
19.	ज्योतिषायुर्वेदयोः अङ्गाङ्गिभावः	रेणु	71
20.	पाण्डुलिपि लेखन के प्रकार	शिक्षा	73
21.	पुरुषबहुत्वम्	रामकुमारी	78
22.	पौरोहित्यपाठ्यक्रमे संस्कृतभाषाशिक्षणस्य उपादेयता	देवकरणशर्मा	83
23.	A Study of Teacher's Intelligence and Emotional Intelligence on Student's Mental Health among Higher Secondary School	Tara Chand Sahu	89
24.	TEACHERS ATTITUDE TOWARDS TEACHING PROFESSION IN RELATION TO THEIR SELF CONCEPT	Abhishek Sharma	95
25.	इतरनाट्यशास्त्रीयग्रन्थेषु भरतकृतनाट्यशास्त्रस्य प्रभावः	चन्द्रिका	100
26.	परमाणुसिद्धिः	सत्यप्रकाश गुप्ता	104
27.	ज्योतिर्विज्ञाने जगत्कारणम्	अमितकुमारझाः	107
28.	गादी - उपभाषायां ध्वनिपरिवर्तनम्	मनोजकुमारः	109
29.	पुराणेषु सत्यस्य महत्त्वम्	हेमन्तसिंहयादवः	114
30.	अग्निपुराण में आयुर्वेदिक तत्त्व : एक अध्ययन	यशोधरा सिसोदिया	117

सामान्य तथा आरक्षित वर्ग के छात्राध्यापकों के कक्षा व्यवहार तथा शिक्षण अभिवृत्ति का अध्ययन

प्रो. रचना वर्मा मोहन

प्रस्तावना (Introduction)

शिक्षण का अर्थ शिक्षक व छात्र के मध्यअन्तः क्रिया से है। कक्षा में होने वाली घटनाओं का बोध वास्तविक कक्षा परिस्थिति के निरीक्षण से सम्भव है। क्रमबद्ध निरीक्षण एक ऐसी प्रक्रिया है, जिससे कक्षा व्यवहारों का निरीक्षण वस्तुनिष्ठ रूप में किया जा सकता है। क्रमबद्ध निरीक्षण से शिक्षक क्रियाओं अथवा शिक्षण व्यवहारों का विश्लेषण किया जाता है जिससे शिक्षक के व्यवहार स्वरूप का पता चलता है साथ ही शिक्षक-छात्र के मध्य होने वाली अन्तः क्रिया का स्वरूप भी स्पष्ट हो जाता है। शिक्षण व्यवहार को वैज्ञानिक ढंग से प्रेषित एवं मूल्यांकित करने हेतु प्रयोग में आने वाली विधियों को व्यवस्थित प्रेक्षण (Systematic Observation) का नाम दिया गया है। इसके अन्तर्गत प्रेक्षण तथा परिवीक्षण मुख्य उद्देश्य होते हैं। मिलर(1971) ने अपनी पुस्तक Systematic Observation Of Teaching में लिखा है व्यवस्थित प्रेक्षण एक ऐसी विधि है जिसके अन्तर्गत प्रेक्षित शिक्षण क्रियाओं को इस रूप में गठित किया जाता है कि प्रशिक्षित व्यक्ति बताए गये तरीकों से प्रेक्षण, अंकन तथा विश्लेषण करता है। इसी सन्दर्भ में फ्लैण्डर्स (1960) ने अपनी अन्तः क्रिया विश्लेषण वर्ग प्रणाली में शिक्षण की अन्तर्क्रियात्मक परिस्थिति में शिक्षक के शाब्दिक एवं अशाब्दिक व्यवहारों के अध्ययन पर बल दिया। साथ ही बताया कि अध्यापक का अप्रत्यक्ष प्रभाव छात्रों की उपलब्धिसे सकारात्मक रूप से सम्बन्धित होता है क्योंकिअधिगम की परिस्थितियाँ शिक्षक अपने व्यवहार से ही निर्मित करता है।

अन्तःक्रिया विश्लेषण वर्ग प्रणाली एक वस्तुनिष्ठ एवं वैज्ञानिक प्रविधि मानी जाती है। इसकी सहायता से तीन सेकेण्ड तथा इससे भी कम समय में होने वाली घटना का भी निरीक्षण क्रमबद्ध रूप से किया जाता है। इसकी मुख्य विशेषता दो या दो से अधिक व्यक्तियों के मध्य स्वोपक्रम (Initiation) तथा अनुक्रिया (Response) का निरीक्षण करना है। इसे फ़्लैण्डर्स दस वर्गीय प्रणाली भी कहा जाता है।

फ्लैण्डर्स ने इस प्रणाली में कक्षा में होने वाले सभी शाब्दिक व्यवहारों एवं क्रियाओं को दो भागों में विभाजित किया है-

1. **शिक्षक कथन (Teacher Talk)**

अ) **अप्रत्यक्षशिक्षकव्यवहार (Indirect Teacher Behavior)**

(1) छात्रों की अनुभूति स्वीकार करना (Accepting Feelings)

Search SEARCH

International Journal of Multidisciplinary Education and Research

ISSN: 2455-4588

MENU
HOME
EDITORIAL BOARD
ARCHIVES
INSTRUCTIONS
INDEXING
SOCIETY
CONTACT US

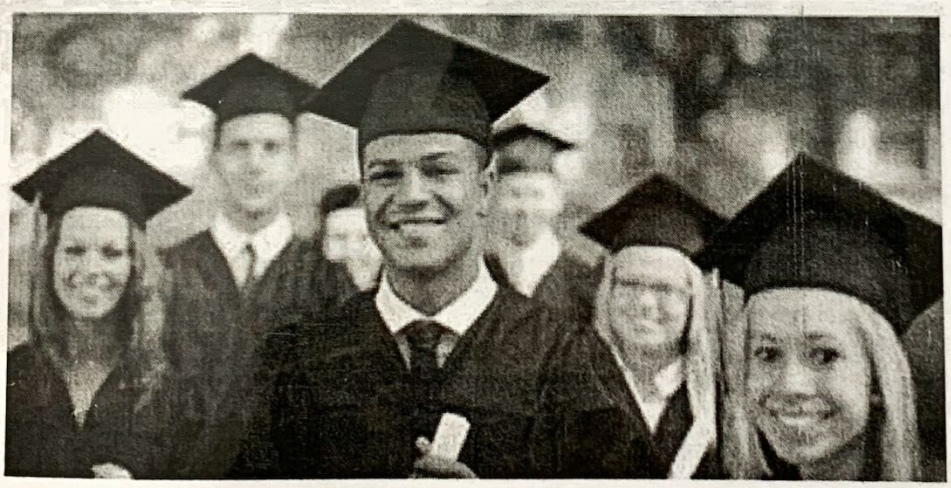

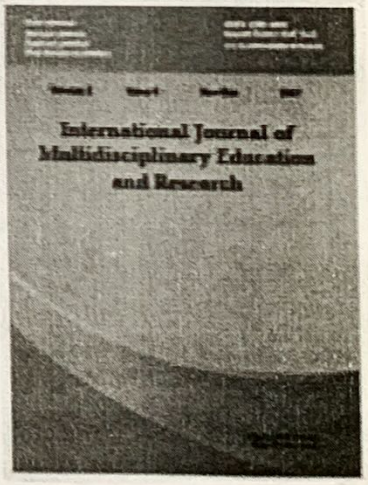

International Journal of Multidisciplinary Education and Research is indexed, refereed, peer reviewed, open access journal, publishing high quality papers on all aspects of education.

Social Science

Humanities, Sociology, Education, Political Science, Law, Policy, Social Review, Arts, History, Philosophy, English

Management

Commerce, Economics, Finance, Accounting, Corporate Governance, Human Resources Management, Marketing Management, Quality Management Training and Development

Engineering

International Journal of Multidisciplinary Education and Research
ISSN: 2455-4588; Impact Factor: RJIF 5.12
Received: 25-05-2020; Accepted: 10-06-2020; Published: 26-06-2020
www.educationjournal.in
Volume 5; Issue 3; 2020; Page No. 39-43

किशोरों का सामाजिक व्यवहार एवं समायोजन: समस्यायें एवं समाधन

Rachna Verma Mohan [1], Prabhakar [2]

[1] Professor, Dept. of Education, Shri Lal Bahadur Shastri Rashtriya Sanskrit Vishwavidyalaya, New Delhi, India

[2] Research Scholar, Dept. of Education, Shri Lal Bahadur Shastri Rashtriya Sanskrit Vishwavidyalaya, New Delhi, India

प्रस्तावना

आधुनिकता के इस युग में व्यक्ति का जीवन सरलता से कठिनता की ओर बढ़ रहा है। जीवन में आधुनिकता के सकारात्मक पक्ष को कम और उसके नकारात्मक पक्ष को अधिक महत्व दिया जा रहा है, जिसका दुष्परिणाम यह हुआ है कि व्यक्ति शारीरिक रूप से कमजोर, आलसी और मानसिक रूप से भी दुर्बल हो गया है। वह शारीरिक और मानसिक श्रम बहुत कम करता है और अधिक समय आधुनिकता से प्राप्त उपकरणों पर बिताता है, यह बहुत हानिकारक है, जिसने प्रत्येक व्यक्ति के व्यवहार को भी प्रभावित किया है। इसका सर्वाधिक प्रभाव किशोंरों पर हुआ है। किशोर साथ रहते हुए भी दूर हो गये हैं, क्योंकि वे आपस में बातचीत नहीं करते बल्कि मोबाइल पर ही लगे रहते हैं, जिसने हमारे आपसी लगाव और विश्वास को भी कम किया है, इसलिए यह आवश्यक है कि आधुनिक उपकरणों का उपयोग जरूरत के अनुसार हो तथा जो व्यवहार करना है, उसको उचित प्रकार से करना सीखे। उचित व्यवहार की आवश्यकता प्रत्येक व्यक्ति को हर जगह होती है। आज की पीढ़ी आधुनिक उपकरणों पर अधिक आश्रित हो गयी है, जिसके कारण उनका शारीरिक व मानसिक विकास थम सा गया है। वे किशोर जरूर हो गये हैं, परन्तु उन्हें किससे कैसा व्यवहार करना है, इसे वे भूल ही गये हैं या उसका ज्ञान ही नहीं है। ये व्यवहार व्यक्ति को अपने बड़ों के सम्पर्क में रहने से मिलता है। उनसे बहुत कुछ सीखने को मिलता है, पर किशोर उनसे बात करना पसन्द नहीं करते बल्कि अपनी जिन्दगी में ही व्यस्त रहते हैं, जिस कारण उनका व्यवहार ठीक से विकसित नहीं हुआ आज का युवा बहुत अधिक उपकरणों पर निर्भर हो चला है, इसके प्रभाव को रोकना आवश्यक है। उन्हें उपकरणों के दुष्प्रभाव के विषय में बताया जाये और साथ ही शारीरिक श्रम की उपयोगिता को भी स्पष्ट किया जाये। युवाओं की बात करें तो वे भी जहाँ पहले खेलने में रुचि लेते थे, अब पूर्णतया उनकी यह आदत समाप्त सी हो गयी है। जबकि खेलों का अत्यधिक महत्व है क्योंकि वहाँ बालक अनेकों बच्चों के सम्पर्क में आता है और व्यवहार करने के अनेक तरीकों से प्रभावित होते हुये उन्हें ग्रहण करता है। तभी बच्चों का व्यवहार उचित दिशा में विकसित होता है।

व्यवहार व्यक्ति के जीवन का ऐसा पक्ष है, जिसे वह त्याग नहीं सकता क्योंकि वह समाज के मध्य में रहता है और अनेक लोगों से उसे बातचीत करनी होती है, इसलिए उसे व्यवहार करना ही होता है। व्यवहार की प्रक्रिया बच्चे के जन्म लेते ही आरम्भ हो जाती है। पहले बच्चे का व्यवहार माता–पिता से तथा धीरे–धीरे परिवार के अन्य सदस्यों से होता है। उनको देखते हुए ही उसके व्यवहार करने का तरीका विकसित होता है। पिफर वह समाज के सम्पर्क में आता है, जहाँ अनेक लोगों से उसका वार्तालाप होता है। 4 वर्ष की आयु में जब वह शिक्षा ग्रहण करने के लिए विद्यालय जाने लगता है, तो वहाँ वह अनेक अध्यापकों व छात्रों के सम्पर्क में आता है। छात्रा पर अध्यापकों के व्यवहार का बहुत प्रभाव होता है। इस तरह वह सामाजिक संरचना में सभी के सम्पर्क में आ जाता है। ये सभी कारक उसके व्यवहार को विकसित करने में सहायक होते हैं, परन्तु यदि उसे उचित परिवेश न मिले तो उसका व्यवहार दुर्व्यवहार में भी परिवर्तित हों सकता है। इस तरह युवा होने तक उसका अपना एक व्यवहार विकसित हो जाता है, जो उसकी पहचान बन जाता है। बालक सभी के सम्पर्क में आता है, परन्तु उस पर सर्वाधिक प्रभाव उसके माता–पिता और अध्यापक के व्यवहार का होता है। किसी भी समाज में अध्यापक का महत्वपूर्ण स्थान होता है, इसलिए यह आवश्यक है कि उसका व्यवहार व चरित्रा सभी को प्रभावित करने वाला एवं अनुकरणीय हो। हम सब पर एक–दूसरे के व्यवहार का बहुत अधिक प्रभाव होता है, इसलिए हमें अपने व्यवहार को उच्च कोटि का बनाना चाहिए। बालक के व्यवहार को विकसित करने का कर्तव्य माता–पिता का होता है, जो उसके व्यवहार को अच्छा बना सकते हैं।

सामाजिक व्यवहार

जब हम एक–दूसरे से बातचीत/वार्तालाप करते हैं तो वह व्यवहार कहलाता है। यह सामाजिक परिवेश में घटित होता है। जैसे – घर, समाज एवं विद्यालय। ये सभी समाज का हिस्सा होने के कारण सामाजिक व्यवहार कहलाता है। व्यवहार की आवश्यकता व्यक्ति को क्षण–क्षण होती है, इसलिए हमें अच्छे व्यवहार का निर्माण शैशवावस्था से ही करना चाहिए, जिससे वे समाज के सभ्य नागरिक बन सकें। किशोरों में अच्छे व्यवहार को विकसित करना नितान्त आवश्यक है, जिसका वर्तमान समय में अभाव देखा जा रहा है। किशोरों में अपने बड़ों के प्रति आदर की भावना नहीं है, अपितु उपेक्षा की भावना है। ऐसा प्रतीत होता है जैसे वे उन बच्चों पर बोझ हो। इसका मुख्य कारण है माता–पिता के द्वारा बच्चों को समय न दिया जाना या उनमें अच्छे व्यवहार को विकसित न करना। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में देखा जाये तो युवाओं के व्यवहार में बहुत न्यूनता आयी है। न्यूनता से तात्पर्य लोगों से अच्छा व्यवहार न करना है।

व्यक्ति के जीवन में सामाजिक व्यवहार बहुत महत्वपूर्ण है, क्योंकि वह समाज का हिस्सा होता है। वह जन्म से ही समाज के सम्पर्क में आ जाता है। समाज में होने वाली क्रियाएं–प्रतिक्रियाएं एवं कार्यक्रम उसे निरन्तर प्रभावित करते हैं। इसलिए बच्चे का सामाजिक विकास होना नितान्त आवश्यक है। इस विषय में एलेक्जेण्डर ने कहा है कि – "व्यक्तित्व का विकास शून्य में सम्भव नहीं। सामाजिक घटनाएं, प्रक्रियाएं तथा व्यक्तित्व के गुणों को निरन्तर निर्धरित प्रतिरूपों के अनुकूल बनाती रहती है।" अर्थात् सामाजिक विकास में समाज की अहम भूमिका है। जहाँ समाज बालक के व्यवहार के विकास में सहायक होता है, वहीं कभी–कभी उसकी कुछ घटनाएं बालक के व्यवहार पर प्रतिकूल प्रभाव डालती हैं। इसलिए माता–पिता उसके व्यवहार को उचित दिशा में विकसित करने हेतु बालक को निरन्तर सही–गलत

ISSN - 2229-6336

SUMANGALI

A Journal of Gender and heritage

Vol. VI, No. 1

Joint Issue March 2020 & March 2021

Centre for Women's Studies
Shri Lal Bahadur Shastri National
Sanskrit University
(Cental University)
New Delhi

ISSN - 2229-6336

SUMANGALI

A Journal of Gender and heritage

Vol VII, No. 1 Joint Issue March 2020 & March 2021

Centre for Women's Studies
Shri Lal Bahadur Shastri National
Sanskrit University
(Cental University)
New Delhi

CONTENTS

1.	श्रीगोदादेव्या स्तुततिरुप्पावैप्रबन्धस्थ-प्रथमपाशुरस्य वेदान्तपरत्वसमीक्षणम्	डॉ.सुदर्शनन् एस्	1
2.	वेदोक्तदिशा नारीशौर्यचिन्तनम्	खुशबू शुक्ला	7
3.	विशिष्टबालानां सुरक्षाप्रदाने प्राचीनभारतीयनारीणां योगदानम्	नन्दुलाल मण्डलः	14
4.	Theoretical Analysis of Gender Issues in Psycho Social Perspective	Prof. Rachna Verma Mohan	20
5.	Woman's Rights in *Yajnavalkyasmriti*	Bikram Keshari Mishra	28
6.	Portrayal of Indian Women in the Works of Kalidasa: A Feministic Approach	Dr. Subhasree Dash	35
7.	The Depiction of Women's Sexuality in the Ratnāvalī Nāṭikā of Harsa	Dr. Shaminaj Khan	44
8.	An Analysis of the Social Condition of Women as depicted in Ikshugandha	Mridusmita Bharadwaj	53
9.	Contribution of Women in the Culture of North East India	Nayandeep Sarma	60
10.	स्मृतियों में प्रतिपादित 'स्त्रीधन' एवं उसकी प्रासङ्गिकता	स्मिता यादव	68
11.	आधुनिक सन्दर्भ में महिला सशक्तिकरण के विभिन्न आयाम	विजय गुप्ता	75

Theoretical Analysis of Gender Issues in Psycho Social Perspective

Prof. Rachna Verma Mohan
Dept. of Education
SLBSRS Vidyapeeth
New Delhi-16

The World Health Organization defines "sex" as 'the biological and physiological characteristics that define men and women' and 'gender' as 'the socially constructed roles, behaviors, activities and attributes that a given society considers appropriate for men and women.'

Thus it can be said that 'Sex' is a biologically determined term and 'Gender' is a socially determined term. Sex refers to the physical differences between male and female. It is constant; it remains the same everywhere and at all times. Gender is used to describe the socially influenced aspects of our lives. Society decides what type of role and responsibilities will be given to a male or a female, which type of activities will be assigned to them and what will be society's expectations. The chromosomes of a person determine the sex, whereas the cultural norms and values related to females and males determine the gender.

Gender related issues such as gender stereotypes, gender roles, gender role identity, gender discrimination, gender bias, gender inequality, gender sensitivity are a matter of great concern in today's scenario. Although we are moving towards a progressive society. We always talk about gender equality. Equal opportunities are being provided to both males and females. But still we find that society has not accepted it with heart and mind. There are so many gender related issues which we observe in day to day life. Before analyzing these issues theoretically, it is important to understand them systematically.

National Journal of
Hindi & Sanskrit Research
(In: Sanskrit, Hindi and English Language)
ISSN No. : 2454 - 9177
Impact Factor (RJIF): 5.11
Peer Reviewed Journal
Author's Helpline : +91 - 8368 241 690
Download Krutidev Fonts

National Journal of Hindi & Sanskrit Research

हमारे बारे में | सामान्य निर्देश | सम्पादकीय परिषद् | शोध क्षेत्र

National Journal of
Hindi & Sanskrit Research
(In: Sanskrit, Hindi and English Language)
ISSN No. : 2454 - 9177
Impact Factor (RJIF): 5.11
Peer Reviewed Journal
Author's Helpline : +91 - 8368 241 690
Download Krutidev Fonts

National Journal of Hindi & Sanskrit Research

<- Previous Volume

Volume 32 (September-October, 2020)

Next Volume ->

S. No.	Manuscript Title & Author	Page No.	Download PDF	Language
1	सत्यम् एव ईश्वरः डॉ. पारमिता पण्डा	01-02		Sanskrit
2	आचार्य मनु अनुसार मनुस्मृति में पतिव्रत्य स्त्री के कर्त्तव्य एवं त्याग डॉ.नन्दनी समाधिया	03-05		Hindi
3	श्रीमद्भागवते जीवनदर्शनम् डॉ.सौम्य रञ्जन महापात्र	06-09		Sanskrit
4	कार्यालयी व्यवस्था व निम्नमध्यवर्गीय जीवन का आख्यान: नौकर की कमीज डॉ. आशुतोष कुमार शुक्ल	10-13		Hindi
5	जल-प्रदूषण के निवारण/संरक्षण की वैदिक दृष्टि डॉ. विनोद चौधरी	14-18		Sanskrit

6	पृथ्वीलक्षणविमर्शः दिवाकर मोहान्ती	19-22		Sanskrit
7	संस्कृतभाषायाः ज्ञानं तथा एतस्याः व्याकरणस्य विचारः Archana Tandale	23-24		Sanskrit
8	महर्षि पतंजलि वर्णित अविद्यादि क्लेश व उनके निवारण के उपायः एक विवेचन डॉ. गायत्री गिरीश मिश्रा	25-28		Hindi
9	काण्वसंहितायाः पूर्वविंशतेः विद्यारण्यानन्दबोधभाष्ययोर्वैशिष्ट्यम् दुर्गाशरणरथः	29-32		Sanskrit
10	लोक संगीत व साहित्य की अटूट अवधारणा डॉ. पूनम तिवारी	33-35		Hindi
11	किशोरावस्था में मूल्य-अन्तर्द्वन्द्व और चिन्ता प्रो. रचना वर्मा मोहन, प्रभाकर	36-40		Hindi
12	इन्टर्नशिप के दौरान मध्य प्रदेश के संस्कृत छात्राध्यापकों तथा अन्य छात्राध्यापकों के तनाव का तुलनात्मक अध्ययन यासमीन अशरफ	41-43		Hindi
13	Reason For The Curse In The Meghaduta Dr. N. A Shihab	44-46		English
14	अज्ञेय – परंपरा से फूटती भारतीय आधुनिकता का नाम हैं डॉ. अनुपम कुमार	47-50		Hindi
15	धर्मसंकटे महाराजानां विचारः डॉ. मुकेश कुमार डागरः	51-52		Sanskrit
16	Bhismasapatha in Mahabharata – An Interpretation Dr. Harish. P.N.	53-55		English
17	तिलक पूजा वस्त्रादीनाञ्च	56-58		Sanskrit

National Journal of
Hindi & Sanskrit Research

ISSN: 2454-9177
NJHSR 2020; 1(32): 36-40
© 2020 NJHSR
www.sanskritarticle.com

प्रभाकर
शोधछात्र, शिक्षाशास्त्र विभाग,
श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय-
संस्कृत विश्वविद्यालय, नई दिल्ली

प्रो. रचना वर्मा मोहन
आचार्या, शिक्षाशास्त्र विभाग,
श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय
संस्कृत विश्वविद्यालय, नई दिल्ली

Correspondence:
प्रभाकर
शोधछात्र, शिक्षाशास्त्र विभाग,
श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय-
संस्कृत विश्वविद्यालय, नई दिल्ली

किशोरावस्था में मूल्य-अन्तर्द्वन्द्व और चिन्ता

प्रो. रचना वर्मा मोहन, प्रभाकर

किसी समाज एवं राष्ट्र को विकसित और साक्षर बनाने में शिक्षा बहुत ही महत्वपूर्ण है। यह व्यक्ति के भीतर मनुष्यत्व की भावना को जगाते हुए एक उत्तम व्यक्तित्व का निर्माण करती है। शिक्षा का मुख्य उद्देश्य ही - व्यक्ति के व्यवहार को परिमार्जित करना अथवा उसका सर्वांगीण विकास करना है। शिक्षा का क्षेत्र बहुत ही विस्तृत है, जिसके अन्तर्गत अनेक विषयों का अध्ययन-अध्यापन किया जाता है। वर्तमान समय में एक विषय का ही बहुत विस्तृत स्वरूप देखने को मिलता है। इन सभी विषयों का समावेश हमारे पाठ्यक्रम में प्राथमिक स्तर से ही किसी न किसी रूप में देखा जा सकता है, जिसके लिए निर्धारित किया गया समय पर्याप्त प्रतीत नहीं होता है और उस पाठ्यक्रम को एक निश्चित समयावधि में पूर्ण करना होता है। यह एक कठिन कार्य है जिसको समय से पूर्ण करने की चुनौती अध्यापक और छात्र के समक्ष होती है। इसमें सबसे अधिक कठिनाई यह है कि कम समय में ही अधिक पाठ्यक्रम को पूरा करना होता है। जिसके कारण छात्र उस विषय का ज्ञान सही से प्राप्त नहीं कर पाते हैं। अनेक विषय होने से वे किसी एक विषय पर ध्यान केन्द्रित करके उस विषय का गहराई से अध्ययन करने में असमर्थ होते हैं। वे अनेक विषयों को पढ़ते अवश्य है, परन्तु उन सभी विषयों में उनका ज्ञान कम रहता है। यहीं से छात्रों के समक्ष चुनौतियों का आरम्भ हो जाता है, जहाँ एक ओर उन्हें अनेकों विषयों के पाठ्यक्रम को पूरा करना होता है, वहीं दूसरी ओर माता-पिता और अध्यापकों की अपेक्षा के अनुरूप प्रदर्शन करने का दबाव होता है। वर्तमान समय में पाठ्यक्रम की संरचना का इन दोनों चरों से सीधा सम्बन्ध प्रतीत होता है। इस समय प्रतिस्पर्धाओं में सफल होने की, जीवन को सुगम बनाने की और जीवन में सफल होने की चिन्ता आदि मुख्य हैं। ऐसी स्थिति उनके भीतर मूल्य-अन्तर्द्वन्द्व और चिन्ता को उत्पन्न करती है। ये दोनों ही ऐसे चर है, जिनका किशोरावस्था में छात्रों के जीवन पर और उनके प्रदर्शन पर प्रतिकूल प्रभाव होता है। इन दोनों को नियन्त्रित करना आवश्यक है। ये दोनों ही चर ऐसे हैं जिनके सकारात्मक और नकारात्मक दोनों ही पक्ष हैं, परन्तु हमने इनको नकारात्मकता के रूप में स्वीकार कर लिया है। इन दोनों को ही समझने की आवश्यकता है, जिनके सकारात्मक पक्ष को भी समझा जाना चाहिए। इन दोनों के सकारात्मक पक्ष किशोरावस्था के लिए बहुत ही उपयोगी व सार्थक हो सकते हैं।

मूल्य-अन्तर्द्वन्द्व (Value Conflict)

मूल्य-अन्तर्द्वन्द्व वह है - जब दो मूल्यों में से किसी एक मूल्य का चयन एक ही समय में करना कठिन होता है, क्योंकि इस परिस्थिति में व्यक्ति यह निर्णय नहीं कर पाता वह किस मूल्य को अपनाये और किस मूल्य को नहीं। यहीं मूल्य-अन्तर्द्वन्द्व की स्थिति है। ये मूल्य परस्पर एक-दूसरे के विपरीत होते हैं, जहाँ एक मूल्य सकारात्मकता को दर्शाता है, वहीं दूसरा मूल्य सकारात्मक प्रतीत नहीं होता है। मूल्य-अन्तर्द्वन्द्व व्यक्ति के जीवन को सकारात्मक व नकारात्मक दिशा में ले जाने में महत्वपूर्ण पक्ष है। वर्तमान समय में मूल्य-अन्तर्द्वन्द्व किशोरों में सामान्य रूप से देखा जा सकता है, क्योंकि इस अवस्था में किशोर एक ही समय में अनेक लक्ष्यों को पूरा करना चाहते हैं, परन्तु यहाँ उन्हें यह स्पष्ट नहीं होता है कि वे क्या करें क्या न करें, किसकी बात मानें किसकी बात अस्वीकार करें ? जिसके कारण उनके समक्ष द्वन्द्व या अनिर्णय की स्थिति उत्पन्न हो जाती है। इस अन्तर्द्वन्द्व की स्थिति को समाप्त कर पाना बहुत ही कठिन है, परन्तु इसको समाप्त करके ही व्यक्ति

VOLUME 5, NUMBER 1
OCTOBER 2021

Perianth

A Refereed Research Journal of Humanities And Social Sciences

D.A.V. CENTENARY COLLEGE
NH-3, N.I.T. FARIDABAD
(Accredited with 'A' Grade by NAAC)

ISSN : 2349-9877

© D.A.V. CENTENARY COLLEGE
NH-3, N.I.T. FARIDABAD-121001
HARYANA

Patron : Dr. Savita Bhagat, Officiating Principal

Chief Editor : Dr. Savita Bhagat

Editor : Dr. Amit Sharma

Published by :
Dr. Savita Bhagat
Officiating Principal
D.A.V. CENTENARY COLLEGE
NH-3, N.I.T. FARIDABAD
Ph. : 0129-2415044
Website : www.davccfbd.com

Printed at :
Graphic Arts
F-122, Katwaria Sarai
Near HDFC Bank, New Delhi-110062
Ph No. 011-41009926, Mob. : +91 9650969926,
E-mail : graphicartsindia@gmail.com

Perianth
A Refereed Research Journal of Humanities And Social Sciences
Annual

Contents

Vol.5 *Oct. 2021* *No. 1*

9.	Rajni Bala	Right to Health in India- Constitutional and Judicial Perspective	62-69
10.	रंजना देवी,' डॉ० सत्यप्रिय आर्य	संस्कृत साहित्य में नारी : एक विमर्श	70-74
11.	Ms. Maheshwari Sharma Dr. Bushan Kumar Prof. Prakash C. Antahal	Role Of Self Help Groups In Improving Socio-economic Conditions Of Rural Women: A District Level Study	75-82
12.	डॉ. विशु मेघनानी	लोक–साहित्य की सांस्कृतिक दृष्टि	83-86
13.	Rabindra Kumar Mishra	Attitude Of Teacher Educators In Jharkhand Towards Sustainable Development	87-97
14.	प्रो0 रचना वर्मा मोहन शोधार्थी मुकेश देवरानी	अधिगम अक्षम छात्रों के सामाजिक कौशलों पर अन्तर्वेशी कार्यक्रम के प्रभाव का अध्ययन	98-109
15.	कपिल देव	ज्योतिष शास्त्रे रोगविचार:	110-119

Perianth
A Refereed Research Journal
of Humanities And Social Sciences

Volume 5- No. 1, October, 2021
ISSN 2349-9877

अधिगम अक्षम छात्रों के सामाजिक कौशलों पर अन्तर्वेशी कार्यक्रम के प्रभाव का अध्ययन

प्रो0 रचना वर्मा मोहन
शोधार्थी मुकेश देवरानी
शिक्षाशास्त्र विभाग
श्रीलालबहादुरशास्त्री केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय,
नई दिल्ली

सारांश

प्रस्तुत शोध का उद्देश्य छात्रों के सामाजिक कौशलों का अध्ययन करना तथा उनके सामाजिक कौशलों पर मध्यवर्ती कार्यक्रम के प्रभाव का अध्ययन करना है। छात्रों के सामाजिक कौशलों पर अन्तर्वेशी कार्यक्रम के प्रभाव का अध्ययन करने के लिए प्रयोगात्मक विधि का प्रयोग किया गया है। प्रस्तुत शोध अध्ययन के लिए दक्षिण दिल्ली में स्थित 10 उच्च प्राथमिक समावेशी विद्यालयों से 50 अधिगम अक्षम छात्रों का चयन किया गया। विद्यार्थियों के सामाजिक कौशलों का विकास करने के लिए शोधकर्ता द्वारा अन्तर्वेशी कार्यक्रम का निर्माण किया गया। इस कार्यक्रम में व्यवहार कौशल, मित्रता कौशल, वार्तालाप कौशल, स्व–नियन्त्रण कौशल, समस्या समाधान कौशल तथा सामाजिक कौशलों को विकसित करने हेतु दिवसवार क्रियाओं का विवरण प्रस्तुत किया गया है। शोध के परिणामों में समावेशी विद्यालयों में अध्ययनरत् अधिगम अक्षम छात्रों के व्यवहार कौशल, मित्रता कौशल, वार्तालाप कौशल, स्व–नियन्त्रण कौशल, समस्या समाधान कौशल तथा सामाजिक कौशलों का स्तर औसत पाया गया। मध्यवर्ती कार्यक्रम के प्रशासन के पश्चात् अधिगम अक्षम विद्यार्थियों के व्यवहार कौशल, मित्रता कौशल, वार्तालाप कौशल, स्व–नियन्त्रण कौशल, समस्या समाधान कौशल तथा सामाजिक कौशलों का स्तर उच्च पाया गया है।

मुख्य बिन्दु *:– अधिगम अक्षम छात्र सामाजिक कौशल व अन्तर्वेशी कार्यक्रम।*

प्रस्तावना

सामाजिक कौशल का अभिप्राय बालकों एवं किशोरों के सामाजिक अन्तःक्रिया के प्रशिक्षण से है। सामाजिक कौशल व्यवहार के वे घटक हैं जो सामाजिक विविधताओं में अन्य व्यक्तियों को समझने तथा वातावरण के अनुसार अनुकूलन करने में सहायक होते

ISSN 2454-1230

चतुर्दशोऽङ्कः, XIV[th] Issue

जुलाई-दिसम्बर, 2021

July-December 2021

शिक्षाप्रियदर्शिनी

अन्ताराष्ट्रिया समकक्षव्यक्ति-समीक्षिता

बहुभाषी-षाण्मासिक-शोधपत्रिका

SHIKSHA PRIYADARSHINI

(An International Peer-Reviewed Multi-Lingual)
Half-Yearly Research Journal)

मुख्यसंरक्षकः

प्रो. श्रीनिवासः वरखेडी

प्रधानसम्पादकः

प्रो. चांदकिरणसलूजा

प्रबन्धसम्पादकः

प्रो. पवनकुमारः

चतुर्दशोऽङ्कः जुलाई-दिसम्बर, 2021 ISSN 2454-1230

शिक्षाप्रियदर्शिनी

अन्ताराष्ट्रिया समकक्षव्यक्ति-समीक्षिता बहुभाषी-षाण्मासिक-शोधपत्रिका

SHIKSHA- PRIYADARSHINI

(An International Peer-Reviewed Multi-Lingual Half-Yearly Research Journal)

प्रधानसम्पादकः

प्रो. चाँदकिरणसलूजा

निदेशकः, संस्कृतसंवर्धनप्रतिष्ठानम्, नवदेहली

सम्पादकाः

डॉ. सुनीलकुमारशर्मा

सहायकाचार्यः, शिक्षासंकायः, श्री लालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रीयसंस्कृतविश्वविद्यालयः, नवदेहली

डॉ. नितिनकुमारजैनः

सहायकाचार्यः, शिक्षाशास्त्रविभागः, केन्द्रीयसंस्कृतविश्वविद्यालयः, भोपालपरिसरः, भोपालम्, मध्यप्रदेशः

डॉ. आरती शर्मा

सहायकाचार्यः, शिक्षासंकायः, श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रीयसंस्कृतविश्वविद्यालयः, नवदेहली

प्रबन्धसम्पादकः

प्रो. पवनकुमारः

परीक्षानियन्त्रकः, केन्द्रीयसंस्कृतविश्वविद्यालयः, नई दिल्ली

प्रकाशकः

संस्कृतसंस्कृतिविकाससंस्थानम्

बाडी, धौलपुरम्, राजस्थानम् – 328021

शिक्षाप्रियदर्शिनी (अङ्कः 14)

अनुक्रमणिका

	प्रधान सम्पादकीय	viii
	प्रबन्ध सम्पादकीय	ix
1.	**राष्ट्रियशिक्षानीतिः 2020** प्रो. चान्दकिरण सलूजा	1
2.	**'राष्ट्रियशिक्षानीतिः 2020' सन्दर्भे संस्कृतविश्वविद्यालयेषु बहुविषयकतायाः क्रियान्वयनोपायाः** प्रो. सन्तोषमित्तलः	6
3.	**National Education Policy 2020: Inclusive Classroom Environment and Constructivist Learning Approach** Prof. Rachna Verma Mohan	12
4.	**राष्ट्रीय शिक्षानीति 2020 के सन्दर्भ में अध्यापक शिक्षा** डा. प्रकाश चन्द्र पन्त 'दीप'	21
5.	**नई शिक्षा के परिप्रेक्ष्य में भारतीय शिक्षा एवं डॉ. एस. राधाकृष्णन** डा. सुरेंद्र महतो	32
6.	**राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में शिक्षक की संकल्पना** डा. दयानिधि शर्मा	36
7.	**शैक्षिक तकनीकी के प्रोन्नयन के लिए राष्ट्रीय शिक्षा निति-2020, के दिशानिर्देश** डा. सुनील कुमार शर्मा	43
8.	**NEP 2020 : Core Spirit and its Objectives** Dr. Jitender Kumar	55
9.	**राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020 की दार्शनिक पृष्ठभूमि** डा. नितिन कुमार जैन	67
10.	**नवराष्ट्रियशिक्षानीतेः परिप्रेक्ष्ये संस्कृतशिक्षा** डा. मनीषजुगरानः	74
11.	**राष्ट्रीय शिक्षा नीति- 2020 के परिप्रेक्ष्य में पाठ्यचर्यागत परिवर्तन** डा. अजय कुमार	81

शिक्षाप्रियदर्शि
(अन्ताराष्ट्रिया समकक्षव्यक्ति-समीक्षिता बहुभाषीयशोधपत्रि
चतुर्दशोऽङ्कः, जुलाई-दिसम्बर, 20
ISSN : 2454-12

3.

National Education Policy 2020: Inclusive Classroom Environment and Constructivist Learning Approach

Prof. Rachna Verma Mohan
Department of Education
Shri Lal Bahadur Shastri National Sanskrit University (Central University),
New Delhi - 110016

Abstract

In present educational scenario all of us are aware of this fact that every child is different from oth All are unique in their own way. Students may differ in their reading level, knowledge, needs, socio econo background, personality, religious beliefs etc. According to NEP 2020 due to these diversities a policy inclusion should be implemented throughout our education system. Schools should prepare children for and ensure that all children, especially differently abled, children from marginalized sections, underprivile class as scheduled caste, scheduled tribes, urban slum dwellers, backward communities, minorities children in difficult circumstances get the maximum benefit of education. To achieve their teachers n special competencies to deal with such type of class. Right to education Act has also helped in creation inclusive classroom as it casts legal obligation on the state and central governments to ensure that every ch should get free and compulsory education between the age of 6 to 14 years. Major shifts in teacher educat programme also supported these inclusive classrooms.

To deal with all types of diversities in classroom teacher also needs different approaches of teach and learning specially constructivist approach which gives new and innovative methodologies collaborative learning, cooperative learning, scaffolding, zone of proximal development, social learning different learning constructivist modal, Blended learning and flipped classroom etc. These recent instructio techniques with the use of ICT are effective in inclusive classroom but it requires a supportive classro environment in which all students feel confident, expressing, exchanging or discussing their ideas.

In present educational scenario all of us are aware of this fact that every child is different from oth All are unique in their own way. Diversity in classroom does not just refer to cultural diversity but also re to diversity in skills, knowledge, needs, socio economic background, motivation to learn and many ot factors. Students may differ in their reading level, athletic ability, cultural background, personality, religi beliefs etc. According to NEP 2020 due to these diversities a policy of inclusion should be implemen throughout our education system. All children should participate in all aspects of their life in and outside school. Schools should prepare children for life and ensure that all children, especially differently ab

I2OR Impact Factor : 3.250 ISSN 2349-364X

वेदाञ्जली Vedanjali

अन्तर्राष्ट्रीय विद्वत्समीक्षित षाण्मासिकी शोधपत्रिका

(International Peer Reviewed Refereed Journal of Multidisciplinary Research)

वर्ष-८ अंक-१६, भाग-२ जुलाई-दिसम्बर, २०२१

प्रधान सम्पादक
डॉ० रामकेश्वर तिवारी

सह सम्पादक
श्री प्रसून मिश्र

प्रकाशन : वैदिक एजूकेशनल रिसर्च सोसाइटी, वाराणसी

- पञ्चमहाभूतेषु व्याप्तं प्राकृतिकचिकित्सादर्शनम् 154–157
  डॉ0 सच्चिदानन्द स्नेही
- समानकर्तृकयोः पूर्वकाले। (3.4.21.) इति सूत्रार्थविचारः 158–160
  डॉ0 शिवरामभट्टः
- वर्तमानाणुविकरणस्य युगेऽद्वैतवेदान्तदर्शनस्य महत्त्वम् 161–163
  डॉ0 वीरेन्द्र कुमार हालदार
- कठतैत्तिरीयोपनिषदि जीवनायोच्चाचारादर्शदर्शनम् 164–167
  ज्योति कुमारी
- पाणिनिनेपालीव्याकरणयोः संप्रदानकारकस्य समीक्षणम् 168–171
  खेमलालशर्मा
- न्यायबौद्धाभिमतप्रमेयविचारः 172–176
  लक्ष्मीप्रसादगौतमः
- उत्तराखण्डीय–समकालिन–संस्कृत–साहित्ये आञ्चलिकतायाः प्रभावः 177–179
  मधुसूदन सती
- तद्भव पत्रिका का साहित्यिक स्वर 180–184
  मालती अंगिरा
- वेदान्ते प्रस्थानत्रयी परिचयः 185–187
  मानसकुमारबेहेरा
- ऋग्वेदे सृष्टेः उत्पत्तिः 188–189
  मोहनलालः व डॉ0 सुभाषसैनी
- प्राथमिक स्तर पर अधिगम अक्षम छात्रों की भाषा उपलब्धि की समस्या एवं समाधान हेतु व्यूह रचनाएँ 190–195
  Prof. Rachna Verma Mohan & Mukesh Devrani
- समाजे ज्योतिषशास्त्रस्य उपयोगिता 196–197
  पवन कुमार शर्मा
- तराना परवीन की कहानियों में चित्रित समस्याएँ 198–200
  प्रो0 विजया भारती जेल्दी
- व्याकरणेषु प्रकृतिभावः 201–205
  Soumyadipta Sen
- प्राकृत में ध्वनि–लोप सम्बन्धी भंडारकर मत 206–207
  सोपान
- काश्मीर शैवदर्शन में तर्क 208–212
  सुधीर रणदेव
- नमः स्वस्तिस्वाहास्वधालंवषड्योगाच्च इत्यत्र भाष्याशयः 213–215
  सुकान्त मान्ना
- छन्दो विमर्शः 216–219
  विनय कुमार मिश्र
- तेलुगु साहित्य में कविता साहित्य का विविध रूप 220–221
  प्रोफेसर. वै. वेंकटलक्ष्मि
- शब्दशास्त्रस्य ऐतिह्यम् 222–225
  अनिमेष मण्डलः

वेदाञ्जली. An International Peer Reviewed Refereed Research Journal
वर्ष-८, अंक-१६, भाग-२, जुलाई-दिसम्बर, २०२१ | ISSN : 2349-364X | I2OR Impact Factor : 3.250

प्राथमिक स्तर पर अधिगम अक्षम छात्रों की भाषा उपलब्धि की समस्या एवं समाधान हेतु व्यूह रचनाएँ

Prof. Rachna Verma Mohan* & Mukesh Devrani**

शिक्षा मानव के सर्वाङ्गीण विकास एवं समाज की चतुर्मुखी उन्नति में सहायक है। शिक्षा मानव को कुशल व्यवहार योग्य बनाती है। शिक्षा के द्वारा अन्तर्निहित गुणों का विकास होता है। इस विकास के लिए विद्यालय जो लघु समाज का प्रतिबिम्ब है तथा जहाँ राष्ट्र के भविष्य का निर्माण होता है। वहाँ शैक्षिक अवसर सभी के लिए समान रूप से उपलब्ध होने हैं।

संविधान की निर्देशिका के अनुसार भी शिक्षा पर प्रत्येक बालक एवं बालिका का समान अधिकार है। चाहे वह किसी भी जाति, धर्म, समुदाय व विशिष्ट अक्षमता का क्यों न हो, शैक्षिक अवसर सभी को समान रूप से मिलने चाहिए।

वर्तमान परिदृश्य में प्रत्येक विकासशील एवं विकसित देश बालकों के उचित व्यक्तित्व का विकास करने के लिए तत्परता से प्रयत्नशील है। लेकिन प्रत्येक बालक की अपनी भाषार्जन एवं सीखने की क्षमता अलग होती है। मुख्यतः भाषिक अक्षमता को ही अधिगम अक्षमता के नाम से जाना जाता है। अधिगम अक्षमता से ग्रसित बालकों की निम्नस्तरीय भाषा उपलब्धि के साथ सामाजिक कौशल भी निम्नस्तरीय होता है।

अधिगम अक्षम छात्रों में उचित सामाजिक कौशलों की कमी होती है। ये अपने सहपाठियों से अनुभव या सामाजिक कौशलों को आसानी से नहीं सीख पाते हैं। विशिष्ट विकृति के कारण ये सामाजिक परिस्थितियों में उचित सामंजस्य स्थापित नहीं कर पाते हैं। इन्हें मित्र बनाने में अत्यधिक कठिनाई होती है। जिसके कारण ये कक्षा-कक्षीय वातावरण के शैक्षिक एवं सांस्कृतिक गतिविधियों में उचित रूप से भागीदारी नहीं कर पाते हैं। अधिगम अक्षम छात्र अपनी बातों को दूसरों तक उचित रूप से संप्रेषित नहीं कर पाते हैं, जिसके परिणामस्वरूप इनके सामाजिक समायोजन में अत्यधिक बाधा उत्पन्न होती है।

अधिगम अक्षमता

अधिगम अक्षमता पद दो अलग-अलग पदों से मिलकर बना है। अधिगम शब्द का आशय व्यवहार में अपेक्षाकृत परिवर्तन से है। अक्षमता का तात्पर्य क्षमता के अभाव या क्षमता की अनुपस्थिति से है। अर्थात् सीखने की क्षमता एवं योग्यता की न्यूनता से है। यह विशिष्ट प्रकार का शब्द समूह है। अधिगम अक्षमता भाषायी कौशल एवं सामाजिक कौशल अर्जन को प्रभावित करता है। विशेष रूप से पढ़ना, लिखना, अवधान, तर्क करना तथा गणितीय एवं सामाजिक कौशलों से संबंधित कठिनाइयों का सामना करने से है।

सैमुअल किर्क ने अधिगम अक्षमता को वाक् भाषा, पठन, लेखन या अंकगणितीय प्रक्रिया में से किसी एक या एक से अधिक विकृति अथवा अवरुद्ध विकास के रूप में परिभाषित किया है।

नेशनल एडवाइजरी कमेटी (संयुक्त राज्य अमेरिका 1986) के शब्दों में अधिगम अक्षमता वाले छात्र लिखने व पढ़ने संबंधी वैज्ञानिक प्रक्रियाओं में विकार प्रदर्शित करते हैं। यह विकार पढ़ने, सुनने व लेखन संबंधी, शब्द विकास, चिंतन व तर्क संबंधी कौशलों की क्षीणता के रूप में हो सकता है।

उपरोक्त परिभाषाओं के आधार पर कहा जा सकता है कि अधिगम अक्षमता मूल रूप में एक या एक से अधिक विकृति है, जो भाषा को समझने, बोलने या गणितीय गणना सहित प्रत्यक्षीकरण इत्यादि कौशलों की ग्रहणता में अधिक कठिनाइयों को उत्पन्न करता है।

अधिगम अक्षमता की प्रकृति - अधिगम अक्षमता से ग्रसित बालकों में प्रत्यक्षीकरण संबंधी विकार पाये जाते हैं। ऐसे बालक भाषायी कौशल में उचित प्रदर्शन एवं प्रयोग नहीं कर पाते हैं। इस समस्या से ग्रसित बालक मौखिक अनुदेशों को समझने और अनुसरण करने में असफल रहते हैं। इन्हें अक्षरों एवं शब्दों को पढ़ने और लिखने में भी अत्यधिक कठिनाई होती है। निम्न भाषा उपलब्धि के कारण इनकी शैक्षणिक उपलब्धि भी निम्नस्तरीय होती है, जिसके परिणामस्वरूप इ नका उचित सामाजिक एवं शैक्षिक विकास अवरुद्ध हो जाता है। अधिगम अक्षमता को लिखित एवं मौखिक भाषा के प्रयोग एवं समझने में सम्मिलित एक या अधिक मनोवैज्ञानिक विकृति के रूप में परिभाषित किया जा सकता है। जो व्यक्ति की सोच, पठन,

*Professor, Dept. of Education, Shri Lal Bahadur Shastri National Sanskrit University, New Delhi
**Research Scholar, Dept. of Education, Shri Lal Bahadur Shastri National Sanskrit University, New Delhi

RNI No.-UPHIN/2017/74904
पीयर-रिव्यूड रेफर्ड जर्नल

ISSN : 2581-687X

शैक्षिक उन्मेष

शिक्षा जगत की शोध एवं विचार केंद्रित पत्रिका

खंड-5, अंक-4; आषाढ़-आश्विन, 2079/जुलाई-सितंबर, 2022

केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा

RNI No.—UPHIN/2017/74904

ISSN : 2581–687X

पीयर-रिव्यूड रेफर्ड जर्नल

शैक्षिक उन्मेष

शिक्षा जगत की शोध एवं विचार केंद्रित पत्रिका

खंड-5, अंक-4; आषाढ़-आश्विन, 2079/जुलाई-सितंबर, 2022

संरक्षक

प्रो. सुरेन्द्र दुबे

उपाध्यक्ष, केंद्रीय हिंदी शिक्षण मंडल, आगरा

ई–मेल : vcofficekhs@gmail.com

परामर्श मंडल

प्रो. मथुरेश्वर पारीक

राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर

ई–मेल : m.pareek1952@gmail.com

प्रो. आर.पी. पाठक

विभागाध्यक्ष, शिक्षा विभाग,

श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ,

नई दिल्ली

ई–मेल : pathakoham@gmail.com

प्रो. अरविंद कुमार पांडेय

डीन, फैकल्टी ऑफ एजूकेशन

महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ, वाराणसी

ई–मेल : arvindkumarpandey62@gmail.com

प्रो. अशोक सिडाना

श्री अग्रसेन स्नातकोत्तर शिक्षा महाविद्यालय,

सी.टी.ई., जयपुर

ई–मेल : sidanaashok@gmail.com

डॉ. नीरा नारंग

एसोसिएट प्रोफेसर, केंद्रीय शिक्षा संस्थान

दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

ई–मेल : nnarang2611@rediffmail.com

प्रधान संपादक

प्रो. सुनील बाबुराव कुलकर्णी

निदेशक, केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा

ई–मेल : directorkhs1960@gmail.com

संपादक–प्रो. हरि शंकर

अध्यापक शिक्षा विभाग

ई–मेल : shankaruk30@gmail.com

सह संपादक–चंद्रकांत कोठे

असिस्टेंट प्रोफेसर, अध्यापक शिक्षा विभाग,

केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा

ई–मेल : kothe2009@gmail.com

संपादक मंडल

प्रो. कैलाश चन्द्र वशिष्ठ

अधिष्ठाता–शिक्षा संकाय, दयालबाग एजूकेशनल

इंस्टीट्यूट, आगरा

ई–मेल : kcvashishtha@gmail.com

प्रो. कल्पलता पांडेय

कुलपति, जननायक चंद्रशेखर

विश्वविद्यालय, बलिया

ई–मेल : p.kalplata@gmail.com

डॉ. गोपाल कृष्ण ठाकुर

विभागाध्यक्ष, शिक्षा विभाग

म.गा.अंत.हिं.वि.वि., वर्धा

ई–मेल : gkthakur11@gmail.com

प्रो. अरविंद झा

डीन, स्कूल ऑफ एजूकेशन

डॉ. बी.आर. आंबेडकर विश्वविद्यालय, लखनऊ

ई–मेल : drarbindjha1@gmail.com

अध्यापक शिक्षा विभाग

केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा

शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार

हिंदी संस्थान मार्ग, आगरा–282005

अनुक्रम

क्र. सं.	आलेख का शीर्षक	लेखक का नाम	पृ. सं.
•	आमुख ...	**सुनील बाबुराव कुलकर्णी**	05–05
•	संपादकीय ...	**हरि शंकर**	07–08
1.	राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 : आकलन एवं मूल्यांकन	**रचना वर्मा मोहन**	09–20
2.	भारतीय ज्ञान प्रणाली का एकीकरण : समस्याएँ एवं समाधान	**वंदना सिंह, रमाकांत सिंह**	21–28
3.	भारतीय शिक्षा परंपरा	**रमेश प्रसाद पाठक**	29–35
4.	महात्मा गांधी : कल, आज और कल	**चंद्रकांत तिवारी**	36–50
5.	भाषा तथा साहित्य शिक्षण में सौंदर्य बोध	**दिनेश कुमार गुप्ता**	51–63
6.	शिक्षा और साहित्य	**विजय रंजन**	64–75
7.	शिक्षण अधिगम में हिंसामुक्त संप्रेषण की भूमिका	**कृष्ण बिहारी पाठक**	76–88
8.	प्रभावशील शिक्षण अधिगम प्रक्रिया और पाठ योजना	**अशोक कुमार**	89–98
9.	मातृभाषा में शिक्षा : बौद्धिक संपदा का विकास	**रमेश चंद सैनी**	99–106
10.	भारतीय संस्कृति एवं शिक्षा	**बृजेश कुमार पाण्डेय**	107–113
11.	जेंडर जनित संप्रेषण : एक समसामयिक विचार–विमर्श	**प्रियंका मित्तल**	114–121

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 : आकलन एवं मूल्यांकन

—रचना वर्मा मोहन

किसी भी देश की शिक्षा व्यवस्था उसकी प्रगति को सुनिश्चित करती है। शिक्षा व्यवस्था जितनी उपयुक्त एवं व्यवस्थित होती है, देश उतनी ही तेजी से प्रगति के पथ पर अग्रसर होता है। शिक्षा का कार्य एक न्यायपूर्ण व सुसंगत समाज की स्थापना करना है जिसमें सभी नागरिकों को शिक्षा का अधिकार समान रूप से प्राप्त हो। नैतिक, सामाजिक एवं भावनात्मक स्तर पर व्यक्ति के विकास में सुदृढ़ता हेतु राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भारत की परंपराओं एवं सांस्कृतिक मूल्यों को आधार मानकर पाठ्यक्रम निर्माण एवं आकलन को महत्व देती है। ज्ञान के बदलते परिदृश्य में प्रौद्योगिकी के तीव्रतम विकास को देखते हुए आकलन एवं मूल्यांकन की विधियों में बदलाव लाना तथा ऑनलाइन आकलन का प्रयोग करना आज की आवश्यकता है। इसी संदर्भ में डॉ. के. कस्तूरीरंगन की अध्यक्षता में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के नीति निर्माताओं तथा सरकार ने विस्तृत शिक्षा नीति देश को दी है। इस नीति के उचित व प्रभावी क्रियान्वयन से शिक्षा की गुणवत्ता बढ़ेगी तथा 'आत्मनिर्भर भारत' का लक्ष्य प्राप्त किया जा सकेगा। वास्तविक धरातल पर आकलन एवं मूल्यांकन के क्षेत्र में प्रभावी क्रियान्वयन से पूर्व अनेक चुनौतियाँ आयेगी तथा अनेक सावधानियाँ अपेक्षित होंगी इन सब पर ध्यान देकर ही इस नीति की प्रभाविता को सुनिश्चित किया जा सकेगा।

पाठ्यक्रम के निर्माण एवं प्रभावी क्रियान्वयन के द्वारा जिस प्रकार शिक्षा की गुणवत्ता सुनिश्चित की जाती है, उसी प्रकार छात्रों की निष्पत्ति का सही आकलन एवं मूल्यांकन उस गुणवत्ता को सुदृढ़ता प्रदान करता है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 प्रत्येक विद्यार्थी की विशिष्टता की पहचान एवं उस विशिष्टता के सर्वोत्तम विकास हेतु सतत आकलन एवं मूल्यांकन पर बल देती है। इसी संदर्भ में राष्ट्रीय शिक्षा नीति निम्नलिखित मूलभूत सिद्धांतों को संपूर्ण शिक्षा प्रणाली के मार्गदर्शन हेतु व्याख्यायित करती है।

(i) प्रत्येक बच्चे की विशिष्ट क्षमताओं की स्वीकृति, पहचान तथा विकास हेतु शिक्षकों को उन क्षमताओं के प्रति संवेदनशील बनाना।

About SVAJRS

Swami Vivekananda Advanced Journal for Research and Studies (SVAJRS) is an international journal that publishes a wide range of topics online. SVAJRS works under the umbrella of the Swami Vivekananda Foundation established in 2022. It promotes research and studies across various fields, following Swami Vivekananda's philosophy of universalism. SVAJRS covers topics in science, technology, engineering, mathematics, social sciences, humanities, education, and management. The journal follows a rigorous peer-review process and provides an opportunity for authors to publish their work in open access. SVAJRS is a valuable resource for individuals seeking the latest research and studies in their respective fields.

- High visibility
- Wide readership
- Rigorous peer-review
- Open access
- Multimedia content
- Prompt publication

Aim & Scope

The vision of Swami Vivekananda Advance Journal for Research and Studies (SVAJRS) is to promote research and studies across various fields by providing a platform for scholars, researchers, and students to share their ideas, knowledge, and experiences. Inspired by Swami Vivekananda's philosophy of universalism, we aim to foster diversity, promote harmony, and embrace the richness of different cultures, religions, and backgrounds.

As an international journal, we strive to publish high-quality, innovative research that contributes to the advancement of knowledge and improves the lives of people around the world. We cover a wide range of topics, including but not limited to, science, technology, engineering, mathematics, social sciences, humanities, education, and management.

Through our rigorous peer-review process, we ensure that the articles we publish are of the highest quality and meet the standards of academic excellence. Our online mode of publication makes our content easily accessible to a global audience, while also reducing our impact on the environment.

Editor-in-Chief

Dr. S.K. Bharadwaj

+91 95327 10238

Published By:

Swami Vivekananda Foundation

511, Hansh Teerath Dhaam, Chetanyapuri, Jhushi, Allahabad - 211019

ISSN 2454-6738

Swami Vivekananda
ADVANCED JOURNAL FOR RESEARCH AND STUDIES
Vol. 3 Jan-June 2024 Issue 2

Swami Vivekananda

ADVANCED JOURNAL FOR RESEARCH AND STUDIES

SCIENCE, TECHNOLOGY, ENGINEERING, MATHEMATICS, SOCIAL SCIENCES, HUMANITIES, EDUCATION, LAW AND MANAGEMENT.

Vol. 3 **Jan - June 2024** **Issue 2**

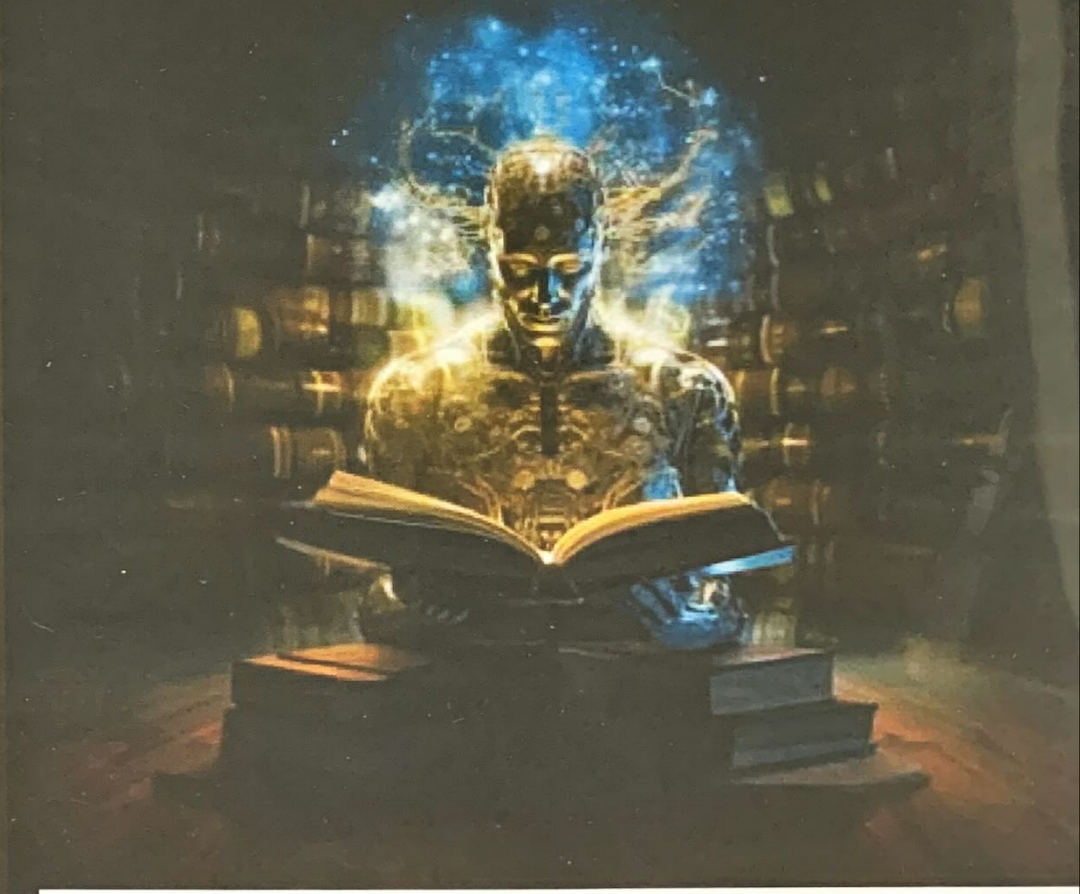

PUBLISHED BY

SWAMI VIVEKANANDA FOUNDATION

Editor-in-Chie
Dr. S.K. Bharadwaj
+91 95327 1023

	The cases of startup in India			
11.	Linguistic Competencies as Correlates of Academic Achievement in Science and Social Studies of Secondary School Students	Rabindra Kumar Mishra	85-96	View
12.	A Study of the effects of yoga biomechanics, psychological relaxation technique and sports nutrition on university-level players	Narendra Kumar Dr. Rohit Kumawat	97-106	View
13.	वीरवर्धमानचरितम् के अन्तर्गत रत्नत्रय धर्म	Dr.Jyoti Thakur	107-115	View
14.	तनावप्रबन्धने योगस्य उपयोगिता	रचना वर्मा मोहन, गौरव जोशी	116-121	View

Swami Vivekananda Advanced Journal for Research and Studies
Online Copy of Document Available on: https://www.svajrs.com/
ISSN: 2584-105X

तनावप्रबन्धने योगस्य उपयोगिता

रचना वर्मा मोहन*
गौरव जोशी**
*आचार्या शिक्षा शास्त्र विभाग (श्री ला.ब.शा.रा. संस्कृत विश्वविद्यालय नई दिल्ली)
**शोध छात्र शिक्षा शास्त्र विभाग (श्री ला.ब.शा.रा. संस्कृत विश्वविद्यालय नई दिल्ली)

अद्यतनव्यस्तजीवने तनावः सामान्यसमस्या अभवत्। तनावः अवांछितः अतिथिः इति वक्तुं शक्यते, यः कदापि कस्यचित् गृहं प्रविष्टुं शक्नोति। बालः, युवा वा वृद्धः वा कस्यापि वयसः व्यक्तिः तनावग्रस्तः भवितुमर्हति। तनावः अस्माकं शारीरिकं मानसिकं च स्वास्थ्यं प्रभावितं करोति। एतेन अस्माकं मनः कुण्ठितः, श्रान्तः च भविष्यति। येन निद्रायाः समस्याः भवन्ति। तेन सह तनावस्य कारणात् हृदयरोगः, उच्चरक्तचापः, मधुमेहः इत्यादयः रोगाः अस्मान् परितः भवन्ति।

तनावग्रस्तः भवितुं सामान्यं वर्तते। तनावः एकः मानसिकः स्थितिः अस्ति यस्मिन् अस्माकं कस्यापि परिस्थितेः निवारणे निर्णयस्य वा कष्टं भवति। तनावः मानवशरीरं मानसिकरूपेण शारीरिकरूपेण च प्रभावितं कर्तुं शक्नोति। यदा तनावः भवति तदा कोर्टिसोल इति हार्मोनः सम्पूर्णे शरीरे प्रसरति। तेन हृदयस्पन्दनं वर्धते, शरीरं चैतन्यं च प्रभावितं करोति। तनावः, चिन्ता, दुःखं च मानसिकस्वास्थ्यसमस्यानां विविधैः सह सम्बद्धाः सन्ति। अस्मिन् काले शरीरे कोर्टिसोल, एपिनेफ्रिन, नोरेपिनेफ्रिन इति हार्मोन बृहत् परिमाणेन उत्पाद्यन्ते, ये बहवः स्वास्थ्यसमस्याः सूचयन्ति।

तनावस्य लक्षणं कारणं च

वर्तमानकाले मानवजीवने तनावः इति दृश्यते। कार्यभारस्य, निद्रायाः अभावस्य, निषण्णजीवनशैल्याः, अस्वस्थभोजनस्य च कारणेन जनाः अतीव तनावग्रस्ताः श्रान्ताः च तिष्ठन्ति। एतेषां सर्वेषां कारणानां कारणात् शारीरिकं मानसिकं च स्वास्थ्यं क्षीणं भवितुं आरभते। क्रोधः, आक्रोशः, सर्वं नियन्त्रयितुं प्रयत्नः च सर्वे भवतः तनावं वर्धयितुं शक्नुवन्ति । यथा-

www.sanskritarticle.com

ISSN NO. 2454-9177

National Journal of Hindi & Sanskrit Research

Volume 52 (January – February, 2024)

National Journal of
Hindi & Sanskrit Research
(In: Sanskrit, Hindi and English Language)
ISSN No. : 2454 - 9177
Impact Factor (RJIF): 7.2
Peer Reviewed Journal
Author's Helpline : +91 - 8368 241 690
Download Krutidev Fonts

National Journal of Hindi & Sanskrit Research

<- Previous Volume

Volume 52 (January – February , 2024)

Next Volume ->

S. No.	Manuscript Title & Author	Page No.	Read Article	Language
1	रामायणकाव्यस्य अखण्डप्रभावः Dr. T. Venkateswarlu	01-04		Sanskrit
2	मीमांसा दर्शन का परिचय एवं आवश्यकता राजेश कुमार गुर्जर	05-09		Hindi
3	हिंदी उपन्यासों में पंजाबी भाषा शैली चंदा रानी	10-13		Hindi
4	माध्यमिकस्तरीयच्छात्रेषु सामाजिकसमायोजनसम्बन्धीसमस्याः परामर्शश्च मधुकरप्रसादपाण्डेयः, डॉ पिंकी मलिक	14-17		Sanskrit
5	"सुशीला टाकभौरे और शांताबाई कांबले की आत्मकथाओं का तुलनात्मक अध्ययन" तोंडचिरकर मीना बाबुराव, प्रो.राजू एस. बागलकोट	18-19		Hindi

17	संस्कृत-वाङ्मये वर्णित प्राणिविज्ञानम् नवीनशास्त्री रा. पुराणिकः, डॉ.एम् वि जयरेवण्णः	65-70		Sanskrit
18	स्त्रीपुरुषयोप्रजननस्वास्थयविचारः राहुलः	71-74		Sanskrit
19	योगः मानसिकस्वास्थ्यञ्च गौरव जोशी, प्रो. रचना वर्मा मोहन	75-77		Sanskrit
20	पत्रकारिता एवं कविता जगत के समन्वयक : घनश्याम श्रीवास्तव रीना कुमारी	78-79		Hindi
21	भारतीयशिक्षायाः विकासे स्वामिश्रद्धानन्दस्य योगदानम् पवनकुमारनागरः	80-83		Sanskrit
22	सौन्दर्यलहर्यां श्रुतितत्वाविचारः योगेश्वरदाशः	84-86		Sanskrit
23	मिश्रित अधिगम (Blended Learning) की अवधारणा – संस्कृत शिक्षा के सन्दर्भ में प्रीति कुमारी, प्रो . रचना वर्मा मोहन	87-90		Hindi
24	श्रीरामभद्रसाहस्रमञ्जर्यां दुःखापवर्गविचारः कोसुलु गोविन्दराजुलु	91-94		Sanskrit
25	बौद्ध-संप्रदाय के दार्शनिक विकास का समीक्षात्मक अध्ययन हर्ष कुमार त्रिपाठी	95-98		Sanskrit
26	वास्तुशास्त्रे भूमिपरीक्षणम् सर्बजया शाश्वती	99-103		Sanskrit
27	Prachin Dharmasastra Swarna Dana Mohan Kumar Mondal	104-106		English
28	गोविन्द मिश्र के उपन्यासों में आर्थिक चेतना	107-		Hindi

National Journal of
Hindi & Sanskrit Research

ISSN: 2454-9177
NJHSR 2024; 1(52): 87-90
© 2024 NJHSR
www.sanskritarticle.com

प्रीति कुमारी
शोधछात्रा,
श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत-विश्वविद्यालय, नई दिल्ली -110016

शोध-निर्देशक
प्रो . रचना वर्मा मोहन
आचार्या शिक्षा शास्त्र विभाग,
श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत-विश्वविद्यालय, नई दिल्ली

Correspondence:
प्रीति कुमारी
शोधछात्रा,
श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत-विश्वविद्यालय, नई दिल्ली -110016

मिश्रित अधिगम (Blended Learning) की अवधारणा - संस्कृत शिक्षा के सन्दर्भ में

प्रीति कुमारी, प्रो . रचना वर्मा मोहन

शिक्षा का तात्पर्य केवल विद्यालय जाकर शिक्षा ग्रहण करना नही अपितु यह तो गर्भधारण से मृत्यु पर्यंत चलने वाली आजीवन प्रक्रिया है ! मनुष्य एक ऐसा प्राणी है जो दिन – प्रतिदिन परिवर्तन , आविष्कार , खोज व अनुसंधान में प्रयत्नशील रहता है , और उसकी ज्ञान की खोज की क्षुधा कभी संतुष्ट नही होती है ! अतः इसी व्यवहार के कारण दिन – प्रतिदिन सूचनाओं , तथ्यों ,सिद्धान्तों , प्रक्रिया , विधियों , संकल्पनाओं आदि को सिखने के लिए प्रयत्नरत रहता है और उसे इन जानकारियों को प्राप्त करने के लिए कोई एक माध्यम का उपयोग सिमित लगता है जिसको पूर्ण करने के लिए वह हर संभव प्रयास करता है ! शिक्षा जगत भी सूचनाओं का एक विशाल भण्डार बन गया है , जिन्हें प्राप्त करने के लिए अलग –अलग आयामों की खोज करनी है ताकि सूचना के इस विशाल. भण्डार से मनुष्य अपनी क्षुधा को संतुष्ट कर ज्ञान को प्राप्त कर सके ! इन आयामों को खोजने में सबसे अधिक सहायता विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी ने की है ! जिस प्रकार ज्ञान के क्षेत्र में वृद्धि हुई , उससे अधिक तीव्रता से प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में प्रगति हुई है ! प्रौद्योगिकी के प्रयोग से मानव जीवन सरल व सुगम बन गया है ! मनुष्य के प्रत्येक पहलु जैसे की - सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक , पारिवारिक यहाँ तक कि शिक्षा जगत में भी प्रौद्योगिकी का ही अधिकतम उपयोग किया जा रहा है ! शिक्षा के क्षेत्र में प्रौद्योगिकी के माध्यम से शिक्षण (Teaching), अनुदेशन (Instruction) एवं प्रशिक्षण (Training) देने हेतु भी प्रौद्योगिकी का ही उपयोग किया जा रहा है !

वर्तमान समय में हमारे देश का प्रत्येक युवा भारतीय शिक्षा में प्रगति कर रहा है , जैसा की - भारत में शिक्षा प्राचीन काल से ही महत्वपूर्ण रही है ! अतः एतिहासिक काल में पुरोहितों के द्वारा शिक्षा ज्ञान प्राप्ति के लिए एवं अन्य वर्ग व्यापार आदि के लिए शिक्षा ग्रहण करते थे ! शिक्षा व्यक्ति को भविष्य में आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करती है उसे मार्गदर्शन देती है , सभ्य समाज का निर्माण भी सुशिक्षित नागरिको के द्वारा ही होता है ! दक्षिण अफ्रीका के भूतपूर्व राष्ट्रपति नेल्सन मंडेला ने अपने शैक्षिक विचारों के अंतर्गत यह कहा है कि – 'शिक्षा सबसे शक्तिशाली हथियार है जिससे आप दुनिया को बदल सकते है !'

'Education is the most powerful weapon which you can use to change the world .'
- Nelson Mandela

इस कथन से एक बात तो स्पष्ट हो जाती है कि 'शिक्षा' निरन्तर समाज के निर्माण में अपना सहयोग प्रदान करती है अपनी अहम् भूमिका निभाती है , साथ ही साथ इतिहास के पन्ने हमें यह भी बताते है कि दुनिया को बदलने की शक्ति रखने वाली शिक्षा व्यवस्था को भी समय के अनुसार निरन्तर बदलना चाहिए ! नवाचार को अपनाना चाहिए ताकि शिक्षा व्यवस्था को नई दिशा प्राप्त हो सके उसका एक नया स्वरुप समाज के पथ निर्माण में अपना सहयोग प्रदान कर सके ! राष्ट्रीय शिक्षा निति 2020 आने के बाद से शिक्षा जगत में प्रौद्योगिकी आधारित शिक्षा व शिक्षण पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है , एवं विभिन्न स्तरों पर अलग-अलग कार्यक्रम भी आयोजित किये जा रहे है ! जैसा की -

www.sanskritarticle.com

ISSN NO. 2454-9177

National Journal of Hindi & Sanskrit Research

Volume 52 (January - February, 2024)

National Journal of
Hindi & Sanskrit Research
(In: Sanskrit, Hindi and English Language)
ISSN No. : 2454 - 9177
Impact Factor (RJIF): 7.2
Peer Reviewed Journal
Author's Helpline : +91 - 8368 241 690
Download Krutidev Fonts

National Journal of Hindi & Sanskrit Research

<- Previous Volume

Volume 52 (January – February , 2024)

Next Volume ->

S. No.	Manuscript Title & Author	Page No.	Read Article	Language
1	रामायणकाव्यस्य अखण्डप्रभाव: Dr. T. Venkateswarlu	01-04		Sanskrit
2	मीमांसा दर्शन का परिचय एवं आवश्यकता राजेश कुमार गुर्जर	05-09		Hindi
3	हिंदी उपन्यासों में पंजाबी भाषा शैली चंदा रानी	10-13		Hindi
4	माध्यमिकस्तरीयच्छात्रेषु सामाजिकसमायोजनसम्बन्धीसमस्या: परामर्शश्च मधुकरप्रसादपाण्डेय:, डॉ पिंकी मलिक	14-17		Sanskrit
5	"सुशीला टाकभौरे और शांताबाई कांबले की आत्मकथाओं का तुलनात्मक अध्ययन" तोंडचिरकर मीना बाबुराव, प्रो.राजू एस. बागलकोट	18-19		Hindi

17	संस्कृत-वाङ्मये वर्णित प्राणिविज्ञानम् नवीनशास्त्री रा. पुराणिकः, डॉ.एम् वि जयरेवण्णः	65-70		Sanskrit
18	स्त्रीपुरुषयोप्रजननस्वास्थयविचारः राहुलः	71-74		Sanskrit
19	योगः मानसिकस्वास्थ्यञ्च गौरव जोशी, प्रो. रचना वर्मा मोहन	75-77		Sanskrit
20	पत्रकारिता एवं कविता जगत के समन्वयक : घनश्याम श्रीवास्तव रीना कुमारी	78-79		Hindi
21	भारतीयशिक्षायाः विकासे स्वामिश्रद्धानन्दस्य योगदानम् पवनकुमारनागरः	80-83		Sanskrit
22	सौन्दर्यलहर्यां श्रुतितत्वाविचारः योगेश्वरदाशः	84-86		Sanskrit
23	मिश्रित अधिगम (Blended Learning) की अवधारणा – संस्कृत शिक्षा के सन्दर्भ में प्रीति कुमारी, प्रो . रचना वर्मा मोहन	87-90		Hindi
24	श्रीरामभद्रसाहस्रमञ्जर्यां दुःखापवर्गविचारः कोसुलु गोविन्दराजुलु	91-94		Sanskrit
25	बौद्ध-संप्रदाय के दार्शनिक विकास का समीक्षात्मक अध्ययन हर्ष कुमार त्रिपाठी	95-98		Sanskrit
26	वास्तुशास्त्रे भूमिपरीक्षणम् सर्बजया शाश्वती	99-103		Sanskrit
27	Prachin Dharmasastra Swarna Dana Mohan Kumar Mondal	104- 106		English
28	गोविन्द मिश्र के उपन्यासों में आर्थिक चेतना	107-		Hindi

National Journal of
Hindi & Sanskrit Research

ISSN: 2454-9177
NJHSR 2024; 1(52): 75-77
© 2024 NJHSR
www.sanskritarticle.com

गौरव जोशी
शोधच्छात्रः, शिक्षा शास्त्र विभाग,
श्री.ला.ब.शा.रा.सं.विश्वविद्यालयः,
नई दिल्ली

शोध-निर्देशक
प्रो. रचना वर्मा मोहन
आचार्या शिक्षाशास्त्र विभाग,
श्री.ला.ब.शा.रा.सं.विश्वविद्यालयः,
नई दिल्ली

Correspondence:
गौरव जोशी
शोधच्छात्रः, शिक्षा शास्त्र विभाग,
श्री.ला.ब.शा.रा.सं.विश्वविद्यालयः,
नई दिल्ली

योगः मानसिकस्वास्थ्यञ्च

गौरव जोशी, प्रो. रचना वर्मा मोहन

मानवजीवनस्य चतुर्णां लक्ष्याणां (धर्मार्थकाममोक्षाः) प्राप्त्यर्थं स्वस्थशरीरस्य आवश्यकता भवति, अतः उक्तं भवति – "शरीरामाद्यं खलु धर्मसाधनम्" इति। सम्प्रति मानवजीवने नैकाः प्रकाराः तनावाः सन्ति। तेभ्यः उत्पद्यमानाः बहवः दुःखः, पीडाः, रोगाः च सन्ति। एतेषां निवृत्तेः उपायान् अन्वेष्य सामान्यजनस्य मनसि योगविषये जिज्ञासा उत्पद्यते। परन्तु योगविषये भिन्नाः प्रत्ययाः (प्रायः दुर्भावनाः) सन्ति। केचन जनाः गृहकार्यतः सर्वथा विरक्तः सन् त्यागजीवनं जीवितुं एकान्तवासं च योगस्य अभ्यासः इति मन्यन्ते, केचन जनाः यथासम्भवं दीर्घकालं यावत् एकस्मिन् स्थाने निश्चलः भवितुं योगस्य अभ्यासः इति मन्यन्ते केचिद् केवलं व्यायामरूपं मन्यन्ते अन्ये तु रोगचिकित्सां मन्यन्ते। न केवलं सम्पूर्णं शास्त्रं, अपितु व्यक्तेः समाजस्य च पारस्परिकसम्बन्धानां आरोग्यदर्शनम् अस्ति। योगाभ्यासात् पूर्वं अस्माभिः स्पष्टतया ज्ञातव्यं यत् योगस्य किम् अभिप्रायः।

योगः

'योग' शब्दः 'युज समाधौ' इति संस्कृतमूलात् निष्पन्नः। बध्नाति, सङ्ग्रहः, संयोजितः, एकीकृतः वा इत्यर्थः। आत्मनः परमात्मनः च संयोगेन कथं मोक्षः प्राप्तुं शक्यते इति योगदर्शने व्याख्यातं भवति।

अतृप्ता ज्ञानतृष्णा मनुष्यस्य विशेषता वर्तते। परितः अनन्तं अद्भुतं च सृष्टिं दृष्ट्वा मनुष्यस्य मनसि तस्य विषये स्वाभाविकं जिज्ञासा उत्पन्ना। अस्याः असीमस्य अनन्तस्य च सृष्टेः ज्ञानं प्राप्तुं विशेषविचाराः, उपासनाविधयः च उद्भूताः। तस्मात् यत् विज्ञानं उद्भूतं तत् दर्शनम्। दर्शनं एतावत् विस्तृतं यत् मनुष्यस्य बुद्धेः तस्य प्रयत्नस्य च परम् अस्ति। अस्मिन् पृथिव्यां ऋषिरूपेण अवतरितस्य दृश्येश्वरस्य मनुष्याणां कृते दानम् अस्ति। परमसुखं प्राप्तुं सर्वोत्तमः मार्गः दर्शनम् एव उपलभ्यते। न्यायदर्शनं, वैशेषिकदर्शनं, सांख्यदर्शनं, योगदर्शनं, मीमांसादर्शनं (पूर्वमीमांसा) एवं वेदान्तदर्शनं (उत्तरमीमांसा), एतानि षट् वैदिकदर्शनानि भारतीयदर्शनस्य मूलदर्शनानि सन्ति। एतेषु योगदर्शनं निहितम् अस्ति। ईश्वरप्राप्त्यर्थं भिन्नमार्गान् सम्यक् न अनुसरति चेत् तस्य जीवने बहवः विघ्नाः, निराशाः, असफलताः च उत्पद्यन्ते। अष्टाङ्गयोगे तु एतादृशं किमपि न भवति। योगसाधकः ईश्वरसाक्षात्कारं प्राप्तुं न शक्नोति चेदपि न्यूनातिन्यूनं शारीरिकं मानसिकं च स्वास्थ्यं प्राप्नोति।

मनुष्येषु ज्ञानस्य इच्छा अपारम् अस्ति। ज्ञानवृक्षः तस्य बुद्धौ अङ्कुरितं, तस्य मूले मनुष्यस्य मनः निहितम् अस्ति। ज्ञानप्राप्त्यर्थं सन्तुलितचित्तस्थितिः अतीव महत्त्वपूर्णा भवति। परन्तु सुख-दुःख-श्रद्धा-संशय-प्रेम-द्वेषादिषु उत्पन्नदुविधाभ्यां मनः विचलितं भवति, मानसिकसन्तुलनं विक्षिप्तं भवति, बुद्धिः च ग्रहणं भवति, ततः मनुष्यः ज्ञानात् वंचितः एव तिष्ठति। मनः सन्तुलितं संस्कृतं च बुद्धेः ग्रहणं निवारयितुं च उद्देश्यं कृत्वा 'योगशास्त्रम्' निर्मितम्। ज्ञानाभ्यासे स्वीकृता उपासनासंस्कारविधिः योगः। एषा आध्यात्मिकतायां आरम्भात् अन्ते यावत् सम्पूर्णा साधनव्यवस्था अस्ति। योगदर्शनं सर्वेषां दर्शनानां